HIN3B18b

मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964)

भारत-संतान

जय भारत, जिसकी कीर्ति
सुरों ने गाई ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

हाँ, गूँज उठे आकाश अनिल के द्वारा ;
अगणित कण्ठों से बहे एक स्वर-धारा ।
कह दो, पुकार कर, सुने चराचर सारा ;
है अब तक भी अस्तित्व अखण्ड हमारा ॥
अब तक भी है कुल-कीर्ति
हमारी छाई ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

घन घोषित कर दे, उक्ति-भूमि भारत है ;
कह दे समीर यह युक्ति-भूमि भारत है ।
ध्वनि उठे धरा से, भुक्ति-भूमि भारत है ;
गूँजे अनन्त नभ, मुक्ति-भूमि भारत है ॥
देवों को भी यह दिव्य
देश मुददायी ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

अच्युत ने हमको आत्म भाव दिखलाया ;
श्री राम-कृष्ण ने धर्म्म-कर्म्म सिखलाया ।
जिन और बुद्ध ने दया-प्रेम दरसाया ;
क्यों न हो हमें इस मातृभूमि की माया ?
भगवत् को भी यह पुण्य -
भूमि मन भाई ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

बस, इसी दिशा से प्रथम प्रकाश हुआ था ;
शुभ साम-गान से मोह-विनाश हुआ था ।

पृथ्वी तल का पशुभाव हताश हुआ था ;
मानव-कुल में मनुजत्व-विकास हुआ था ॥
हमसे जीवन की ज्योति
जगत ने पाई ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

उत्पनन् मुक्ति भी हुई अहा ! भारत में ;
मनु ने स्वतन्त्र को सुखी कहा भारत में ।
अधिकार-गर्व यों अटल रहा भारत में ;
भाई भाई तक लड़े महाभारत में ॥
शर-शय्या पर भी राज -
नीति समझाई ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

सब बातों में हम रहे सदा आगे हैं ;
विघ्नों के भय से कहीं नहीं भागे हैं ।
सदियों तक सोये, किन्तु पुनः जागे हैं ;
अब भी हमने निज भाव नहीं त्यागे हैं ॥
फिर वारी है संसार !
हमारी आई ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

उद्‌बोधन

हतभाग्य हिन्दू-जाति ! तेरा पूर्वदर्शन है कहाँ ?
वह शील, शुद्धाचार, वैभव देख, अब क्या है यहाँ ?
क्या जान पड़ती वह कथा अब स्वप्न की-सी है नहीं ?
हम हों वही, पर पूर्व-दर्शन दृष्टि आते हैं कहीं ? ॥१॥

बीती अनेक शताब्दियाँ पर हाय ! तू जागी नहीं;
यह कुम्भकर्णी नींद तूने तनिक भी त्यागी नहीं ।
देखें कहीं पुर्वज हमारे स्वर्ग से आकर हमें-
आँसू बहावें शोक से, इस वेश में पाकर हमें ॥२॥

अब भी समय है जागने का देख आँखें खोल के,
सब जग जगाता है तुझे, जगकर स्वयं जय बोल के ।
नि:शक्य यद्यपि सो चुकी है किन्तु तू न मरी अभी,
अब भी पुनर्जीवन-प्रदायक साज हैं सम्मुख सभी ॥३॥

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, जान लो इसका पता,
जो थे कभी गुरु, है न उनमें शिष्य की भी योग्यता ।
जो थे सभी से अग्रगामी, आज पीछे भी नहीं,
है दीखती संसार में विपरीतता ऐसी कहीं ? ॥४॥

दुर्दैव-पीड़ित जो पुराने चिह्न कुछ कुछ रह गये,
देखो, न जाने भाव कितने व्यक्त करते हैं नये ।
हा ! क्या कहें आरम्भ ही में रुँध रहा है जब गला,
भगवान क्या से क्या हुए हम, कुछ ठिकाना है भला ॥५॥

कुछ काल में ये जीर्ण पहले चिह्न भी मिट जाएँगे,
फिर खोजने से भी न हम सब मार्ग अपना पाएँगे ।
जातीय जीवन-दीप अब भी स्नेह पावेगा नहीं,
तो फिर अँधेरे में हमें कुछ हाथ आवेगा नहीं ॥६॥

अब भी सुधारेंगे न हम दुर्दैव-वश अपनी दशा,
तो नाम-शेष हमें करेगा काल ले कर्कश कशा ।
बस टिमटिमाता दीख पड़ता आज जीवन-दीप है,
हा दैव ! क्या रक्षा न होगी सर्वनाश समीप है ? ॥७॥

निज पूर्वजों का वह अलौकिक सत्य, शील निहार लो,
फिर ध्यान से अपनी दशा भी एक बार विचार लो ।
जो आज अपने आपको यों भूल हम जाते नहीं,
तो यों कभी सन्ताप-मूलक शूल हम पाते नहीं ॥८॥

.../...

करते उपेक्षा यदि न हम उस उच्चतम उद्देश की,
तो आज यह अवनति नहीं होती हमारे देश की ।
यदि इस समय भी सजग हों तो भी हमारा भाग्य है,
पर कर्म के तो नाम से ही अब हमें वैराग्य है ॥७०॥

सच्चे प्रयत्न कभी हमारे व्यर्थ हो सकते नहीं,
संसार भर के विघ्न भी उनको डुबो सकते नहीं ।
वे तत्त्वदर्शी ऋषि हमारे कह रहे हैं यह कथा–
"सत्यप्रतिष्ठायां क्रिया (सु-) फलाश्रयत्वं" सर्वथा ॥७१॥

आओ बनें शुभ साधना के आज से साधक सभी,
निज धर्म्म की रक्षा करें, जीवन सफल होगा तभी ।
संसार अब देखे कि यदि हम आज हैं पिछड़े पड़े–
तो कल बराबर और परसों विश्व के आगे खड़े ॥७२॥

ब्राह्मण बढ़ावें बोध को, क्षत्रिय बढ़ावें शक्ति को,
सब वैश्य निज वाणिज्य को, त्यों शूद्र भी अनुरक्ति को ।
यों एक मन होकर सभी कर्तव्य के पालक बनें–
तो क्या न कीर्ति-वितान चारों ओर भारत के तनें ॥७३॥

माँ, कह एक कहानी

"माँ, कह एक कहानी",
"बेटा, समझ लिया क्या तूने
मुझको अपनी नानी ?"
"कहती है मुझसे यह चेटी ।
तू मेरी नानी की बेटी ।
कह माँ, कह, लेटी ही लेटी,
राजा था या रानी ?
राजा था या रानी ?
माँ, कह एक कहानी ।" (१)

"तू है हठी मानधन मेरे,
सुन, उपवन में बड़े सवेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,
जहाँ सुरभि मनमानी ।"
"जहाँ सुरभि मनमानी ?
हाँ, माँ, यही कहानी ।" (२)

"वर्ण वर्ण के फूल खिले थे,
झलमलकर हिम-बिन्दु झिले थे,
हलके झोंके हिले-मिले थे,
लहराता था पानी ।"
"लहराता था पानी ?
हाँ, हाँ, यही कहानी ।" (३)

"गाते थे खग कल-कल स्वर से,
सहसा एक हंस ऊपर से
गिरा, विद्ध होकर खर-शर से,
हुई पक्ष की हानी ।"
"हुई पक्ष की हानी ?
करुणा-भरी कहानी ।" (४)

"चौंक उन्होंने उसे उठाया,
नया जन्म-सा उसने पाया ।
इतने में आखेटक आया,
लक्ष्य-सिद्धि का मानी ।"
"लक्ष्य-सिद्धि का मानी ?
कोमल-कठिन कहानी ।" (५)

"माँगा उसने आहत पक्षी,
तेरे तात किन्तु थे रक्षी ।
तब उसने, जो था खगभक्षी --
हठ करने की ठानी ।"
"हठ करने की ठानी ?
अब बढ़ चली कहानी ।" (६)

" हुआ विवाद सदय-निर्दय में,
उभय आग्रही थे स्वविषय में ।
गई बात तब न्यायालय में,
सुनी सभी ने जानी ।"
"सुनी सभी ने जानी ?
व्यापक हुई कहानी ।" (७)

"राहुल, तू निर्णय कर इसका --
न्याय पक्ष लेता है किसका ?
कह दे निर्भय, जय हो जिसका ।
सुन लूँ तेरी बानी ।"
"माँ, मेरी क्या बानी ?
मैं सुन रहा कहानी । (८)

कोई निरपराध को मारे,
तो क्यों अन्य न उसे उबारे ?
रक्षक पर भक्षक को वारे,
न्याय दया का दानी ।"
"न्याय दया का दानी ?
तूने गुनी कहानी ।" (९)

उपालंभ

सिद्धि-हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात,
पर चोरी-चोरी गये, यही बड़ा व्याघात ।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते ।
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ-बाधा ही पाते ?
मुझको बहुत उन्होंने माना,
फिर भी क्या पूरा पहचाना ?
मैंने मुख्य उसी को जाना,
जो वे मन में लाते ।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते ।
स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में --
क्षात्र-धर्म के नाते ।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते ।
हुआ न यह भी भाग्य अभागा,
किस पर विफल गर्व अब जागा ?
जिसने अपनाया था, त्यागा ।
रहें स्मरण ही आते,
सखि, वे मुझसे कह कर जाते ।

नयन उन्हें हैं निष्ठुर कहते,
पर इन से जो आँसू बहते,
सदय हृदय वे कैसे सहते ?
गये तरस ही खाते ।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते ।
जायँ, सिद्धि पावें वे सुख से,
दुखी न हों इस जन के दुख से,
उपालंभ दूँ मैं किस मुख से ?
आज अधिक वे भाते ?
सखि, वे मुझसे कह कर जाते ।
गये, लौट भी वे आवेंगे,
कुछ अपूर्व अनुपम लावेंगे,
रोते प्राण उन्हें पावेंगे,
पर क्या गाते-गाते ?
सखि, वे मुझसे कह कर जाते ।